राजकोषीय ईमानदारी के पथ का अनुसरण कर रही है।

विदेशी कर्ज और उसकी अदायगी की राशि

971. **श्री राम जेठमलानी :**
मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी:

क्या **वित्त मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) गत वित्तीय वर्ष 1993-94 के दौरान विदेशों से कितनी राशि कर्ज और सहायता के रूप में प्राप्त की गई है और अप्रैल, 1994 को देश में विदेशी कर्ज की स्थिति क्या थी ;

(ख) क्या यह सच है कि उक्त वित्तीय वर्ष के दौरान, गत वर्षों में प्राप्त विदेशी कर्जों की अदायगी की किश्तों और उन पर ब्याज का भुगतान भी समय-समय पर किया जाता रहा ;

(ग) यदि हां, तो कुल कितनी राशि की अदायगी की गई है ;

(घ) क्या यह भी सच है कि विदेशी कर्ज एवं विदेशी सहायता की राशि तथा विदेशी कर्जों पर ब्याज एवं किस्तों की अदायगी की राशि के मध्य अंतर पिछले कुछ वर्षों से लगातार बढ़ रहा है; और

(ङ) यदि नहीं, तो वर्ष 1991-92, 1992-93, और 1993-94 के दौरान उक्त अंतर का अलग-अलग ब्यौरा क्या है?

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री एम. वी० चन्द्रशेखर मूर्ति) : (क) 1993-94 के दौरान विभिन्न देशों संस्थानों से विदेशी ऋण और सहायता की राशि अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष उधार और विदेशी वाणिज्यिक उधार सरकारी खाते, गैर सरकारी खाते में 17658 करोड़ रुपए बैठते हैं। 31 मार्च, 1994 की स्थिति के अनुसार इन खातों पर बकाया विदेशी ऋण 198009 करोड़ रुपए होने का अनुमान है।

(ख) जी, हां ।

(ग) 1993-94 के दौरान इन खातों पर मूलधन की पुनर्अदायगी और ब्याज के भुगतान की राशि क्रमशः 11258 करोड़ रुपए और 7854 करोड़ रुपए होने का अनुमान है ।

(घ) जी, हां ।

(ङ) प्रश्न नहीं उठता।

मुद्रा प्रसार की दर में वृद्धि

972. **श्री राम जेठ मलानी :** : क्या **वित्त मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि गत वित्तीय वर्ष 1993-94 के दौरान देश में मुद्रा प्रसार की दर बढ़कर लगभग 18 प्रतिशत हो गई थी ;

(ख) यदि नहीं, तो इस संबंध में तथ्य क्या हैं ;

(ग) क्या यह भी सच है कि देश में मुद्रा प्रसार में वृद्धि होने से मूल्यों में वृद्धि होने के आसार बढ़ जाते हैं ;

(घ) यदि हां, तो सरकार की उस पर क्या प्रतिक्रिया है; और

(ङ) उक्त वर्ष के दौरान देश में मुद्रा प्रसार में हुई वृद्धि के क्या कारण थे?

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री एम० वी० चन्द्रशेखर मूर्ति) : : (क) जी, हां। वित्तीय 1993-94 के दौरान मुद्रा आपूर्ति (एम० 3) की दर में 18.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता।

(ग) और (घ) अर्थ व्यवस्था में कीमतों में वृद्धि, बाजार के मांग और आपूर्ति दोनों पक्षों पर कार्य कर रहे परस्पर अन्यो न्यक्रियाओं के कारण सम्मूहों का परिणाम है और इस तरह मुद्रा आपूर्ति में तीव्र वृद्धि के समान एकाकी कारक मुख्य रूप से उत्तरदायी नहीं हो सकता फिर भी, मुद्रा प्रसार से उत्पन्न मांग दबावों को नियंत्रित करने के उद्देश्य से अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों द्वारा नकद प्रारक्षित अनुपात बाए रखा जा सकता है जो निवल मांग और सावधिक देयताओं का 14 से 15 प्रतिशत तक के तीन चरणों में वसूल किया जा रहा है। वयथ राजकोषीय हुंडियों के माध्यम से भारतीय रिजव बैंक द्वारा केंद्रीय सरकार को दिए